अध्याय – 7

मध्यकालीन कला एवं स्थापत्य

भारतीय कला का काल विभाजन इतिहास के आधार पर ही पूर्व, मध्य और उत्तरमध्य काल के युगमान में साधारणतः किया जाता है। यह परिधियाँ निःसन्देह ऐतिहासिक युगधारा पर आधारित हैं और यह कहना आवश्यक नहीं है कि कला व इतिहास के काल परिणाम सदा समान नहीं होते। सांस्कृतिक एवं कलात्मक पदचिह्न काल विधान के मोहताज नहीं होते, वरन वे अपनी सार्थकता की स्मृति भविष्य के भाल (ललाट) पर छोड़ जाते हैं। मूलतः ऐतिहासिक काल निर्धारण राजकुलों के उत्कर्ष–अपकर्ष, उदय–पतन और आकस्मिक राजनीतिक घटनाओं से युगपत बदलाव का लेखा–जोखा है किन्तु कला इन परिवर्तनों, राजकीय संरक्षण एवं सामाजिक धार्मिक परिवर्तनों के चलते इतिहास के युगों का अतिक्रमण कर जाती है।

यहाँ मध्यकाल (600 ई. से 900 ई. पूर्व मध्य और 900 से 1200 ई. उत्तर मध्य) को स्थायी विभाजन न मानकर कला विकास, शैलियों में परिवर्तन और कला रूपों में आये बदलावों को लेकर उनके अध्ययन की दृष्टि से काल विभाजन किया गया है। भारतीय इतिहास में गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात् समग्र भारत की अवधारणा के विखण्डन के फलस्वरूप उत्तर गुप्तकाल में अनेक नवीन स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई। इनमें मालवा–मगध में उत्तर–गुप्त, उत्तर–मध्यभारत में कनौज का वर्धन वंश और दक्षिण में चालुक्य, राष्ट्रकूट और पल्लव राजवंश प्रमुख थे।

उपरोक्त सभी राजवंश एक दूसरे के समकालीन रहे, फलस्वरूप अनेक राजनीतिक उतार–चढ़ाव एवं ऐतिहासिक घटनाक्रमों ने राज्यों के मध्य क्षेत्रीय सीमाएं अवश्य निर्धारित कर दीं। लेकिन निर्बाध चली आ रही गुप्तकालीन सांस्कृतिक एवं कलात्मक परम्पराएँ कालान्तर में भी अध्यात्म भावभूमि पर अविरल प्रवाहमान रहीं। फिर चाहे वो बौद्ध, हिन्दू और जैन आदि किसी भी धर्म सम्प्रदाय से सम्बद्ध क्यों न हो, सभी में कलात्मक साहचर्य एवं भावगत एकरूपता अविभाज्य है। इनमें प्रधान देवप्रतिमा ही मात्र धर्म विशेष का संकेत सूचक जान पड़ती हैं।

कला इतिहास की दृष्टि से उत्तर भारत के सम्राट हर्षवर्धन, जो वीर योद्धा एवं कुशल प्रशासक के साथ–साथ कला प्रेमी भी थे, के कलात्मक प्रेम की पुष्टि हमें चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांत से होती है। ह्वेनसांग ने नालन्दा विश्वविद्यालय, विभिन्न मंदिरों एवं हर्ष रचित साहित्य का उल्लेख किया है। 620 ई. में 'उत्तरापथनाथ' नरेश हर्षवर्धन को हराकर चालुक्यवंशीय राजा पुलकेशिन द्वितीय ने अपने साम्राज्य का पश्चिम–मध्य भारत तक विस्तार कर नासिक को राजधानी बना सकल 'दक्षिणोपथनाथ' की उपाधि का वरण किया।

सातवीं सदी का पूर्वाह्न चालुक्यकालीन कला का चरमोत्कर्ष था। इसी समय के मंदिरों में ऐहोल का दुर्गा मंदिर 550 ई., बादामी के गुफा मंदिर श्रृंखला में विष्णु मंदिर 578 ई., पटकदल में लोकेश्वर शिव को समर्पित पापनाथ एवं विरूपाक्ष मंदिर 740 ई. आदि के वास्तु एवं मूर्तन की समृद्ध परम्परा का उत्कर्ष एलोरा के गुफा मंदिरों में पूरे वैभव के साथ देखा जा सकता है। कालान्तर में दक्षिण के शक्तिशाली क्षत्रप

दंतीदुर्ग ने 753 ई. में पुलकेशिन द्वितीय को परास्त कर दक्षिण में राष्ट्रकूटों की सत्ता स्थापित की। इसी वंश के प्रतापी राजा कृष्ण राम प्रथम ने विश्वप्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण करवाया।

ऐलोरा

पूर्व मध्यकालीन मूर्तिकला एवं स्थापत्य के प्रमुख केन्द्र के रूप में ऐलोरा 'वेरूल' का महत्त्व सर्वोपरि है। औरंगाबाद से 55 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ऐलोरा धार्मिक त्रिवेणी है जो बौद्ध, हिन्दू और जैन धर्म के आपसी साहचर्य एवं कलात्मक ऐक्य का साक्षात् प्रतिरूप है। 8वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में निर्मित 34 गुफाओं के विशाल कला संसार में गुफा संख्या एक से 12 तक बौद्ध धर्म और 13 से 29 तक हिन्दू धर्म को समर्पित हैं वहीं शेष पाँच गुफाएं जैन धर्म की दार्शनिकता को परिलक्षित करती हैं।

विशाल मूर्तन, बेजोड़ अलंकृत स्तंभों और आध्यात्मिक भावनाओं से युक्त ऐलोरा के सभी मंदिर बारादरी शैली (एकाश्म शैली) में एक ही पर्वत में कटे दो या तीन मंजिले हैं। इन गुफा मंदिरों का निर्माण चालुक्य काल से राष्ट्रकूटों के समय तक सदियों से चलता रहा। चालुक्यकालीन गुफाओं में मुख्य रूप से तीन मंजिला गुफा संख्या 12 विश्वकर्मा मंदिर, बुद्ध के सात मानुषी रूपों के मूर्तन को लेकर विशेष प्रसिद्ध है। गुफा संख्या 15 दशावतार मंदिर, जिसमें विष्णु के नृसिंहावतार एवं अन्य पौराणिक कथाओं का सुन्दर मूर्तन है।

लेकिन इन सबसे अधिक वैभवशाली एवं मूर्तन की समृद्धता का साक्षात् है राष्ट्रकूट राजा कृष्ण राम प्रथम द्वारा निर्मित गुफा संख्या 16 का कैलाशनाथ मंदिर, जिसे रंगमहल भी कहते हैं। इस भव्य मंदिर का निर्माण 757 – 790 ई. के मध्य हुआ। संसार के असाधारण मंदिरों में शामिल कैलाशनाथ मंदिर का सृजन एकल पर्वत को तराश कर 276 फीट गहरे, 154 फीट चौड़े और 120 फीट ऊँचे खुले आंगन में स्वतंत्र मंदिर के रूप में किया गया है। कला इतिहासकार डॉ. आनन्द कुमार स्वामी के मतानुसार कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण पट्टकदल के विरूपाक्ष मंदिर को ध्यान में रखकर बेसर शैली में किया गया है।

रावण का कैलाशोतलन

गौपुरम से मंदिर के प्रवेश द्वार के ठीक सामने खुले आंगन के मध्य स्थित विशाल शिवालय के दोनों तरफ 60 फीट ऊँचे अलंकृत विशाल स्तंभ और स्तंभों के पास विशाल गजराज स्वतंत्र रूप से मूर्तमान होकर मंदिर की भव्यता को बढ़ा रहे हैं। मुख्य मंदिर में प्रवेश द्वार नंदी के मण्डप से निर्मित है, जिससे होकर हम सोलह अलंकृत स्तंभों से युक्त मण्डप के प्रार्थना कक्ष में पहुँचते हैं। मण्डप के ठीक सम्मुख मध्य में थोड़ा ऊपर स्थित गर्भ गृह में विशाल शिवलिंग सुशोभित है। गर्भ गृह पर स्थित 96 फीट ऊँचा मस्तकशिखर द्रविड़ शैली में निर्मित है। विमान के प्रदक्षिणापथ से लगे पाँच अलग–अलग देवालय और आंगन में अन्य देवताओं के आवास बने हैं। मंदिर के सभी स्तंभ नागर शैली में निर्मित हैं। चालुक्यकालीन बेसर शैली की पूर्ण परिणति कैलाश मंदिर में मिलती है।

मुख्य मंदिर की बाहरी दीवारों एवं सम्पूर्ण परिसर में लगभग 42 पौराणिक आख्यानों एवं शिव प्रसंगों का भव्य मूर्तन है, जिनमें रावण का कैलाशोतलन, शिव विवाह, शिव ताण्डव, रामायण के प्रसंग, भैरव एवं अन्य देवी–देवताओं का मूर्तन प्रमुख है।

शिव ताण्डव, ऐलोरा

कैलाश के भैरव की मूर्ति जिनती भयकारक है, पार्वती प्रतिमा उतनी ही सौम्य और सहनशील और शिव ताण्डव का प्रबल वेग पाषाण में अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं है। शिव विवाह में शिव–पार्वती का परिणय भावी सुख की मर्यादा बांध देता है। वहीं रावण का कैलाशोतलन पौरुष की पराकाष्ठा को परिभाषित करता है। रावण भुजाएं फैलाए कैलाश के सम्पूर्ण तल को पुरजोर हिलाता है, जिससे उसकी संधि तक हिल जाती है। भयसंत्रस्त पार्वती शिव के विशाल भुजदण्ड का आलम्बन ले रही है और अन्य जीव–जन्तु भय से त्रस्त हैं। वहीं शिव अटल–अचलता का भाव लिए अपने पाँव के अंगूठे से पर्वत को हल्के से दबा कर रावण के श्रम को निरर्थक कर देते हैं। ऐलोरा का कैलाशनाथ मंदिर भारतीय वास्तु एवं मूर्तन की मूर्धन्य उपलब्धि है।

अन्य गुफाओं में जैन धर्म को समर्पित गुफा इन्द्रसभा, जिसे छोटा कैलाश भी कहते हैं, अपने अलंकरण एवं मूर्तन में बेजोड़ है। इसमें इन्द्र, इंद्राणी एवं महावीर भगवान का मूर्तन भव्य बन पड़ा है। गुफा संख्या 21, रामेश्वर मंदिर में शिव ताण्डव, महिषासुरमर्दिनी एवं घूमरेलण गुफा संख्या 29 में शिवविवाह, रावण का कैलाशोतलन आदि का मूर्तन भी बड़ा ही भव्य एवं भावपूर्ण बन पड़ा है।

ऐलिफेंटा

7 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में निर्मित राष्ट्रकूटकालीन गुफा मंदिरों में ऐलिफेंटा का शिव मंदिर प्रमुख है। मुम्बई से 6 मील दूर एक टापू पर स्थित यह मंदिर अपने स्थापत्य एवं मूर्तन के लिए ऐलोरा के समकक्ष माना जाता है। धारापुरी नाम से प्रसिद्ध इस समुद्री टापू पर विशाल पर्वत के ऊपरी भाग को तराश कर मंदिर श्रृंखला का निर्माण किया गया है।

मुख्य शिव मंदिर अपने प्रवेश द्वार से 60 फीट चौड़ा और 18–20 फीट ऊँचा है। छत चट्टान काट कर बनाए गए अलंकृत स्तंभों पर आधारित है। स्तंभों पर ऐलोरा की भांति देवी–देवताओं एवं अन्य आकृतियों का सुन्दर मूर्तन है। मंदिर के मध्य 18 फीट ऊँची विशाल शिव की त्रिशिरा मूर्ति विराजमान है। महेश्वर की प्रकाण्ड मूर्ति, जिसके मुखमण्डलों पर बड़ी ही प्रशान्त गंभीरता व्याप्त है, विशाल जटाजूट श्रृंगार से सुशोभित मुकुट उनके संकल्प को प्रतिष्ठित करता है।

धीर–गंभीर चिंतनशील मस्तक, बोझिल पलकों युक्त नेत्रों से नीचे झांकते शिव, गुप्तकालीन होठ पर रसपूरित भाव लिये हुए उत्कीर्ण किये गये हैं। बायीं ओर का मुख मण्डल शिव के रौद्र रूपी 'भैरव' संहारक भाव को चरितार्थ करता है, जिसके एक हाथ में नर मुण्ड और कंधे पर झूलते सर्पों का मूर्तन, बल एवं रूप में असाधारण है। वहीं दायीं ओर पार्वती–रूप आकर्षक मुखमण्डल, मोतियों एवं पुष्पों से आच्छादित मुकुट से सुशोभित है और हाथ में कमल–पुष्प सृष्टि के प्रति उनके सौम्य एवं सृजनात्मक भाव को दर्शाते हैं।

महेश्वर शिव की त्रिमूर्ति के दोनों ओर के स्तंभ विष्णु और ब्रह्मा के रूप को मूर्तमान करते हैं। स्तंभ के दांयी ओर अर्द्धनारीश्वर की 16 फीट ऊँची प्रतिमा लोकजीवन में प्रकृति–पुरुष के साहचर्य से

सृष्टि के सृजन की प्रतीकात्मकता का द्योतक है। वहीं बांयी ओर शिव विवाह के स्वरूप का लीलाभाव सृष्टि के प्रणय को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त विराट एवं लोमहर्षक शिव नटराज, सृष्टि के संतुलन का और शिव योगेश्वर की प्रतिमा पुरुष के स्वयं की चित्त जागृति (आत्म कल्याण) के आध्यात्मिक स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती है। वहीं शिव गंगाधर का मूर्तन तप एवं श्रम के साध्य को सार्थकता प्रदान करता है।

अर्द्धनारीश्वर, ऐलिफेंटा

ऐलिफेंटा के शिव मंदिर का शिल्प विधान प्रकृति–पुरुष के सम्पूर्ण विस्तार के मनोवैज्ञानिक एवं सौन्दर्यात्मक पक्ष की सत्यम्–शिवम्–सुन्दरम् की अवधारणा को पुष्ट करता है।

क. प्रवेश द्वार
ख. योगेश्वर शिव
ग. शिव नटराज
घ. महेश मूर्ति (त्रिमूर्ति)
ड. अर्द्धनारीश्वर
च. शिव विवाह
छ. गर्भ गृह – शिवलिंग
व. शिव प्रसंग – शिव गंगाधर, अंधकठेश्वर शिव
ल. अन्य गुफा मंदिर

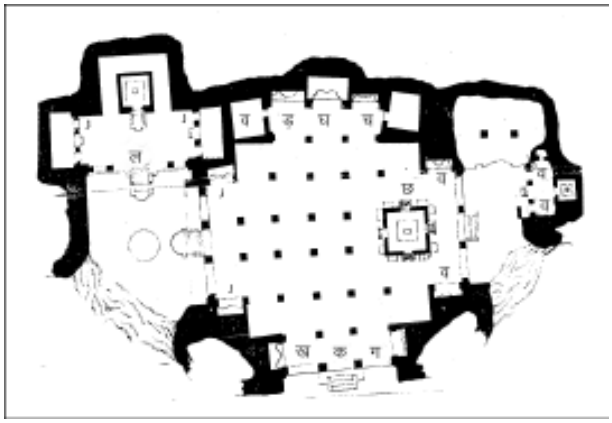

ऐलिफेंटा के शिव मंदिर की योजना

महाबलिपुरम

मध्यकालीन मंदिर श्रृंखला के अन्तर्गत पल्लवकालीन मंदिरों में महाबलिपुरम एवं कांची के समुद्र तट पर निर्मित विशाल मूर्तन अपने समय की गौरव गाथा बयान करते हैं। आठवीं सदी में शैव धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा के फलस्वरूप पल्लववंशीय प्रतापी राजा महेन्द्र वर्मन प्रथम और उसके पुत्र नृसिंह वर्मन द्वितीय ने कांची को राजधानी बनाया। सातवीं सदी के मध्य नृसिंह वर्मन द्वितीय के समय कांची एवं महाबलिपुरम पल्लवकालीन वास्तु एवं मूर्तन के प्रमुख कला केन्द्र बन कर उभरे। इस समय स्थापत्य एवं मूर्तन की एक नवीन द्रविड़ शैली का विकास हुआ।

इस शैली में निर्मित 'मामल्ल शैली' मंदिर 'रथ' या पगोड़ा के नाम से जाने जाते हैं। जो शिल्प विधान में भव्य एवं बेजोड़ हैं।

कांची के प्रमुख मंदिरों में राज सिद्धेश्वर शिव मंदिर, बैकुण्ठ पैरूमल का मंदिर और मांग्तेश्वर का शिव मंदिर आदि पल्लवकालीन स्थापत्यमूर्तन के प्रारंभिक स्वरूप को निश्चित करते हैं। वहीं मामल्ल शैली के विख्यात महाबलिपुरम के विशाल शिल्प इस समय का उत्कर्ष है। महाबलिपुरम के मंदिरों में सात पगोड़ा (सप्त रथ) गंगावतरण, त्रिमूर्ति मंदिर, वराह एवं दुर्गा मंदिर प्रमुख हैं।

सात पगौडा, महाबलिपुरम

गंगा अवतरण नामक शिल्प अत्यन्त ही दृश्य संकुल पर्वत शिला की दीवार है जो खुले आकाश के नीचे अपनी अनन्त मूर्ति सम्पदा के लिए विश्वप्रसिद्ध है। यह सम्पूर्ण दृश्य 98 फीट ऊँचा और 33 फीट चौड़ा विशाल पाषाण शिल्प 'तीर्थम्' के नाम से पुकारा जाता है, जिसे 'अर्जुन तपस्या' भी कहते हैं। विशाल पाषाण शिला के मध्य एक चौड़ी दरार गंगा के बहाव को परिलक्षित करती है, जिसके दोनों ओर देवों, मानवों, पशुओं, नागों, गजों, गंधर्वों एवं विद्याधरों आदि की अनन्त सजीव आकृतियाँ निरूपित हैं। ये सभी आकृतियाँ गंगा की अमृतधारा के बहाव की ओर हाथ जोड़े खड़ी हैं या उस ओर बढ़ती जा रही हैं। गंगा के बहाव के ठीक नीचे पास में दोनों भुजाएं ऊपर उठाए भागीरथ के तपस्या निमग्न रूप का मूर्तन है। वहीं पास में एक बिलाव को भी तपस्यारत दिखाया गया है। यह समूची जनसंकुल दृश्य–परम्परा भावाभिव्यंजना एवं मूर्तन की पराकाष्ठा है।

शेषशायी विष्णु, महाबलिपुरम

इसके अतिरिक्त 'सप्त रथों' के रूप में पाँच पाण्डव रथ, द्रौपदी रथ व गणेश रथ मुख्य हैं। जिन्हें प्रत्येक को अलग–अलग पर्वत काटकर नवीन द्रविड़ शैली में निर्मित किया गया है। वास्तव में ये सभी शिव मंदिर हैं। इनमें सर्वप्रथम धर्मराज रथ, भीमरथ, सहदेव रथ हैं, जिनकी छतें पिरामिडनुमा हैं और एक के ऊपर एक तीन तल चढ़ते चले गए हैं जो अपने विविध अलंकरणों से सुशोभित हैं। वहीं अर्जुन रथ, नकुल रथ, द्रौपदी रथ और गणेश रथ अपेक्षाकृत साधारण स्तर को दर्शाते हैं। इन रथों की कलात्मक विशेषताओं में पतले कीर्तिमुख सिंह पीठ पर स्थित अलंकृत स्तंभ, मकरतोरण द्वार और चैत्य वातायनीय मेहराबों में 'उत्कीर्ण' मूर्तिशिल्प विशेष दर्शनीय हैं। वाराह मंदिर में विष्णु के दस अवतारों का मूर्तन तो है ही, उसके अतिरिक्त दुर्गा, गजलक्ष्मी एवं सूर्यादि के मूर्तन के साथ राजा महेन्द्र वर्मन को रानियों के साथ उत्कीर्ण किया गया है। महेश मण्डप या दुर्गा मंदिर में महिषासुरमर्दिनी की

आक्रामक प्रतिमा अपनी गति एवं ओज के लिए जानी जाती है। इस गुफा मंदिर में शेषशायी विष्णु का अतिविशाल मूर्तन अपनी भव्यता में बेजोड़ है। इसी गुफा में नृसिंह वर्मन को रानियों के साथ उत्कीर्ण किया गया है। पल्लवकालीन कलाओं का उत्तरोत्तर विकास क्रम आने वाले समय में नृसिंह वर्मन द्वितीय के पश्चात् अनुगामी राजाओं के शासनकाल में निर्बाध रूप से यथावत् रहा।

महिषासुर मर्दनी 'दुर्गा', महाबलिपुरम

उत्तर मध्यकालीन कला

दक्षिणी भारत के समानान्तर उत्तर भारत में अनेक राजपूत शक्तियों का उदय हुआ, जिनमें गुर्जर, प्रतिहार, परमार, सोलंकी, पॉल, चौहान, सैन और चन्देल आदि प्रमुख थे। उत्तर मध्यकाल राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उथल–पुथल का रहा, लेकिन यहाँ कलात्मक विकास में साम्यता देखने को मिलती है। इस काल में मुख्यतः हिन्दू और जैन धर्म के स्वतंत्र मंदिरों का निर्माण अधिक हुआ। उत्तर भारत की वास्तु एवं मंदिर निर्माण की कला आर्यावर्तीय अथवा 'नागर' कहलाई, जिसके उदाहरण हमें कश्मीर, हिमाचल, राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, बिहार, बंगाल एवं उड़ीसा आदि में मिलते हैं। उत्तर भारत के कश्मीर में कला वैभव का उल्लेख हमें कल्हण कृत 'राज तरंगिणी' में मिलता है एवं अन्य ग्रन्थों में मध्यकालीन सहस्त्र मंदिरों के निर्माण का उल्लेख मिलता है, जिनमें राजा ललितादित्य द्वारा निर्मित मार्तण्ड के सूर्य मंदिर की विशेष प्रसिद्धि है। हिमाचल में कांगड़ा के बैजनाथ का शिव मंदिर, कुल्लू, बजोड़ा का हाटक वीरेश्वर मंदिर एवं चम्बा के हिन्दू मंदिर प्रमुख हैं।

कडरिया महादेव मंदिर, खजुराहो

उत्तर मध्यकालीन वास्तु एवं मूर्तन की मंदिर परम्परा में राजस्थान के मंदिरों में ओसियाँ (जोधपुर) का दुर्गा मंदिर, किराडू (बाड़मेर) का सोमेश्वर मंदिर, माउण्ट आबू, दिलवाड़ा के जैन मंदिर, गुजरात – काठियावाड़ का मुघेरा सूर्य मंदिर, गिरनार के जैन मंदिर और सोमनाथ शिव मंदिर प्रमुख हैं। वहीं उड़ीसा के भुवनेश्वर, पुरी एवं कोणार्क की विशाल मंदिर श्रृंखला जो आठवीं सदी के उत्तरार्द्ध से 13 वीं सदी के मध्य मूर्तवत् हुई – इन मंदिरों में भुवनेश्वर का वैताल–दैऊल मंदिर, लिंगराज मंदिर, पुरी का जगन्नाथ मंदिर एवं कोणार्क का सूर्य मंदिर (काला

पगोड़ा) अपनी स्थापत्य शैली एवं मूर्तन की भव्यता के लिए भारत में अनुपम हैं। मध्यप्रदेश के चन्देलवंशीय राजाओं द्वारा निर्मित खजुराहो के जगत प्रसिद्ध मंदिरों की शृंखला में कंडरिया महादेव मंदिर, विश्वनाथ मंदिर, रामचन्द्र मंदिर और चतुर्भुज विष्णु मंदिर हिन्दू धर्म के हैं तथा पार्श्वनाथ के जैन धर्म से सम्बन्धित मंदिर के अतिरिक्त चौसठ योगिनियों के विशाल मंदिर विशेष महत्त्व के हैं। ये सभी मंदिर अपने वास्तु विन्यास एवं मूर्तन में अभिराम, सजीव एवं गतिशीलता में अनोखे हैं, जिनका प्रभाव कालान्तर में दक्षिण की चौलकालीन मूर्तियों पर देखने को मिलता है।

अभ्यास प्रश्न

लघुउत्तरात्मक प्रश्न

1. मध्यकालीन मूर्तिकला के प्रमुख केन्द्रों के नाम लिखो।
2. ऐलोरा के कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण कब और किसने करवाया ?
3. ऐलिफेंटा के गुफा मंदिर किस धर्म से सम्बन्धित हैं, और कहाँ स्थित हैं ?
4. महाबलिपुरम के मुख्य मूर्तिशिल्प के नाम लिखो।
5. उत्तरमध्यकालीन प्रमुख मंदिरों के नाम लिखो।

वर्णनात्मक प्रश्न

1. मध्यकालीन मूर्तिकला पर एक निबन्ध लिखिए।
2. कैलाशनाथ मंदिर, ऐलिफेंटा के वास्तु एवं मूर्तन की कलात्मक विशेषताएं लिखिए।
3. महाबलिपुरम के मूर्तिशिल्पों पर एक लेख लिखिए।